प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 19 (2019–20)

हिन्दी – अ (कोड–002)

कक्षा– 10

निर्धारित समय– 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 10

अंग्रेजों ने भारत में रेल सेवा की शुरुआत 16 अप्रैल 1853 को अपनी प्रशासनिक सुविधा के लिए की थी लेकिन 160 वर्ष बाद करीब 16 लाख कर्मचारियों, प्रतिदिन चलने वाली 11 हजार ट्रेनों, 7 हजार से अधिक स्टेशनों एवं करीब 65 हजार किलोमीटर रेलमार्ग के साथ 'भारतीय रेल' आज देश की जीवनरेखा बन गयी है। रेलवे के दस्तावेज के अनुसार 16 अप्रैल 1853 को मुंबई और ठाणे के बीच जब पहली रेल चली, उस दिन सार्वजनिक अवकाश था। पूर्वाहन से ही लोग बोरीबंदी की ओर बढ़ रहे थे, जहाँ गवर्नर के निजी बैंड से संगीत की मधुर धुन माहौल को खुशनुमा बना रही थी। साढ़े तीन बजे से कुछ पहले ही 400 विशिष्ट लोग ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे के 14 डिब्बों वाली गाड़ी में चढ़े। चमकदार डिब्बों के आगे एक छोटा फॉकलैंड नाम का भाप इंजन लगा था। करीब साढ़े चार बजे फॉकलैंड के ड्राइवर ने इंजन चालू किया, फायरमैन उत्साह से कोयला झोंक रहा था। इंजन ने मानो गहरी साँस ली और इसके बाद भाप बाहर निकलनी शुरु हुई। सीटी बजने के साथ गाड़ी को आगे बढ़ने का संकेत मिला और उमस भरी गर्मी में उपस्थित लोग आनंद विभोर हो उठे। इसके बाद फिर से एक और सिटी बजी और छुक–छुक करती हुए यह पहली रेल नजाकत और नफासत के साथ आगे बढ़ी। यह ऐतिहासिक पल था जब भारत में पहली ट्रेन ने 34 किलोमीटर का सफर किया। रेल का इतिहास काफी रोमांच से भरा है जो 17वीं शताब्दी में शुरु होता है। पहली बार ट्रेन की परिकल्पना 1604 में इंग्लैण्ड के वोलॉटन में हुई थी जब लकड़ी से बनायी गई पटरियों पर काठ के डब्बों की शक्ल में तैयार की गई ट्रेन को घोड़ों ने खींचा था। इसके दो शताब्दी बाद फरवरी 1824 में पेशे से इंजीनियर रिचर्ड ट्रवेथिक को पहली बार भाप के इंजन को चलाने में सफलता मिली। भारत में रेल की शुरुआत की कहानी अमेरिका के कपास की फसल की विफलता से जुड़ी हुई है जहां वर्ष 1846 में कपास की फसल को काफी नुकसान पहुँचा था। इसके कारण ब्रिटेन के मैनचेस्टर और ग्लासगो के कपड़ा कारोबारियों को वैकल्पिक स्थान की तलाश करने पर विवश होना पड़ा था। ऐसे में भारत इनके लिए मुफीद स्थान था।

1843 में लॉर्ड डलहौजी ने भारत में रेल चलाने की संभावना तलाश करने का कार्य शुरु किया। डलहौजी ने बंबई, कोलकाता, मद्रास को रेल संपर्क से जोड़ने का प्रस्ताव दिया। हालांकि इस पर अमल नहीं हो सका। इस उद्देश्य के लिए साल 1849 में ग्रेट इंडियन पेंनिनसुलर कंपनी कानून पारित हुआ और भारत में रेलवे की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ।

1. भारत में रेल सेवा की शुरुआत कब और क्यों हुई थी। 2

उत्तर : भारत में रेल सेवा की शुरुआत 16 अप्रैल 1853 को हुई थी। अंग्रेजों ने इसकी शुरुआत अपनी प्रशासनिक सुविधा के लिए की थी।

2. वर्तमान में 'भारतीय रेल' की स्थिति बताइए। 2

उत्तर : करीब 16 लाख कर्मचारियों, प्रतिदिन चलने वाली 11 हजार ट्रेनों, 7 हजार से अधिक स्टेशनों एवं करीब 65 हजार किलोमीटर रेलमार्ग के साथ 'भारतीय रेल' आज देश की जीवनरेखा बन गई है।

3. पहली ट्रेन की परिकल्पना कैसी थी? 2

उत्तर : पहली ट्रेन की परिकल्पना 1604 में इंग्लैंड के वोलॉटन में हुई थी। जब लकड़ी से बनाई गई पटरियों पर काठ के डिब्बों की शक्ल में तैयार की गई ट्रेन को घोडों ने खींचा था।

4 भारत में रेल की शुरुआत के लिए तात्कालिक कारण क्या था? 2

उत्तर : अमेरिका में वर्ष 1846 में कपास की फसल को काफी नुकसान पहुँचा था। इसके कारण ब्रिटेन के मैनचेस्टर और ग्लासगो के कपड़ा कारोबारियों को वैकल्पिक स्थान की तलाश करने पर विवश होना पड़ा था। ऐसे में भारत इनके लिए सही स्थान था। इसलिए अंग्रेजों को यहाँ रेल का विकास करना सही लगा।

5. पहली बार भाप का इंजन कब चलाया गया 1

उत्तर : पहली बार भाप का इंजन 1824 में इंजीनियर रिचर्ड ट्रवेथिक ने चलाया था।

6. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : 'भारतीय रेल' देश की जीवनरेखा अथवा रेल का इतिहास।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 16

2. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. आचार्य ने कहा है कि प्रतिदिन योग करना चाहिए। (रेखांकित उपवाक्य का भेद लिखिए)

उत्तर : संज्ञा आश्रित उपवाक्य।

2. राजी मेहनत करके पास होगी। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : राजी जब मेहनत करेगी तभी पास होगी।

3. सैनिक उठा और लड़ने लगा। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : सैनिक उठकर लड़ने लगा।

4. गरीबों की कोई नहीं सुनता। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : जो गरीब हैं उनकी कोई नहीं सुनता।

3. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. अंशु द्वारा पूजा की जाती है। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

उत्तर : अंशु पूजा करती है।

2. पक्षी आकाश में उड़ रहे हैं। (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : पक्षियों द्वारा आकाश में उड़ा जाता है।

3. बच्चों ने शोर किया। (वाच्य का भेद बताइए)

उत्तर : कर्तृवाच्य।

4. हम रोज नहाते हैं। (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : हमारे द्वारा रोज नहाया जाता है।

4. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का पद–परिचय लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. अर्जुन अच्छा खेल खेलता है।

उत्तर : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्मकारक खेलता है क्रिया का कर्म, 'अच्छा' विशेषण का विशेष्य।

2. राम, लक्ष्मण और सीता वन गए।

उत्तर : समानाधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय।

3. भोलू द्वारा कल एक पुस्तक दी गई थी।

उत्तर : जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, भूतकाल, कर्मवाच्य पुस्तक कर्म की क्रिया।

4. हम बाग में गए, परंतु वहाँ कोई आम न मिला।

उत्तर : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए $1 \times 4 = 4$

1. कौनसे रस को 'रसराज' कहा जाता है।

उत्तर : श्रृंगार रस।

2. रण बीच चौकड़ी भर–भरकर चेतन बन गया निराला था।
जो निक हवा से बाग हिली, लेकर सवार उड़ जाता था।
काव्यांश में निहित रस स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : वीर रस।

3. वात्सल्य रस से सिक्त एक पंक्ति लिखें।

उत्तर : 'ऐसा प्यारा समय न खोओ।
मेरे प्यारे अब मत सोओ।।'

4. श्रृंगार रस के कितने भेद होते हैं?

उत्तर : श्रृंगार रस के दो भेद होते हैं–
1. संयोग
2. वियोग

5. वीर रस का स्थायी भाव क्या है।

उत्तर : उत्साह।

खण्ड–ग 34

(पाठ्य–पुस्तक एवं पूरक पाठ्य–पुस्तक)

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 6

उनकी चिंता हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की थी। हर मंच से इसकी तकलीफ बयान करते, इसके लिए अकाट्य तर्क देते। बस इसी एक सवाल पर उन्हें झुँझलाते देखा है और हिंदी वालों द्वारा ही हिंदी की उपेक्षा पर दुख करते उन्हें पाया है। घर–परिवार के बारे में, निजी दुख–तकलीफ के बारे में पूछना उनका स्वभाव था और बड़े से बड़े दुख में उनके मुख से सांत्वना के जादू भरे दो शब्द सुनना एक ऐसी रोशनी से भर देता था जो किसी गहरी तपस्या से जनमती है। 'हर मौत दिखाती है जीवन को नयी राह।' मुझे अपनी पत्नी और पुत्र की मृत्यु याद आ रही है और फादर के शब्दों से झरी विरल शांति थी।

1. फादर को सबसे अधिक दुख किस बात पर होता था? 2

उत्तर : फादर कामिल बुल्के हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की उत्कट अभिलाषा रखते थे। उन्हें तब अत्यधिक दुख होता जब हिंदी भाषा–भाषी लोग ही हिंदी की उपेक्षा करते थे।

2. प्रश्नोक्त गद्यांश में परिलक्षित फादर की किन्हीं दो चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। 2

उत्तर : प्रश्नोक्त गद्यांश में फादर के हिंदी प्रेमी, संवेदनशील तथा शांत स्वभाव होने की सहज ही अभिव्यक्ति होती है।

3. फादर के मुख से निकले शब्द जादू–सा काम करते थे। कैसे? स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : बड़े से बड़े दुख में फादर के सांत्वना भरे शब्द जादू का काम करते थे। लेखक की पत्नी और पुत्र की मौत पर फादर द्वारा कहे गए यह शब्द– 'हर मौत दिखाती है जीवन को नयी राह' नई प्रेरणा देने वाले थे तथा मन को शांत करने वाले थे।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. हालदार साहब भावुक क्यों हो उठे?

उत्तर : हालदार साहब परम देशभक्त थे और समाज के युवाओं से वे निराश उन्हें लगता था कि आज के युवाओं में देशभक्ति नहीं है परंतु हालदार साहब सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा देखकर आशावादी हो गए। उन्हें यह विश्वास हो गया कि अपने देश के युवा एवं बच्चों में भी देशभक्ति की पावन भावना भरी हुई है। यह सोचकर वे अत्यंत भावुक हो गए।

2. मन का तन पर हावी होने का क्या तात्पर्य है? पाठ 'बालगोबिन भगत' के आधार पर बताएँ।

उत्तर : प्रश्नोक्त पंक्ति का तात्पर्य संगीत के प्रभाव से तन–मन होकर अति प्रसन्न होना है। अर्थात मन की प्रसन्नता से तन का क्रियान्वित होना; जैसे– झूमना, नाचना, इत्यादि।

3. वह कौन–सी घटना थी जिसको सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर?

उत्तर : एक बार कॉलेज से प्रिंसिपल का पत्र आया कि लेखिका की गतिविधियों के खिलाफ क्यों न अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाए। पत्र पढ़कर पिता जी गुस्से से भन्नाते हुए कॉलेज गए। लेकिन वहाँ से घर लौटे, तो बहुत खुश थे। लेखिका की प्रशंसा करते हुए कहने लगे कि सारे कॉलेज की लड़कियों पर तेरा इतना रौब है कि तुम्हारे एक इशारे पर वे क्लास छोड़कर मैदान में आ जाती हैं और नारे लगाने लगती हैं। मैं तो गर्व से यह कहकर आया कि स्वतंत्रता का संघर्ष तो पूरे देश की पुकार है, इसे कौन रोक सकता है? अपने मुँह से पिताजी द्वारा ऐसी प्रशंसा सुनकर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया, न अपने कानों पर। लेखिका के अनुसार उसके पिता उसकी प्रतिभा और क्षमता को तभी पहचान पाए।

4. बिस्मिल्ला खाँ मिली–जुली संस्कृति के प्रतीक थे। कैसे? स्पष्ट करें?

उत्तर : काशी में बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक–दूसरे के पूरक रहे हैं। उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ लय और सुर की तमीज सिखाने वाला नायाब हीरा रहे हैं जो हमेशा से दो कौमों को एक होने व आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देते रहे हैं। बिस्मिल्ला खाँ मुसलमान होते हुए भी संकटमोचन मंदिर में किए जाने वाले पाँच दिनों के संगीत आयोजन में अवश्य रहते थे। वे जब भी काशी से बाहर रहते हैं, तब विश्वनाथ व बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते थे। इससे यह पता चलता है कि बिस्मिल्ला खाँ मिली–जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

5. लेखक द्वारा नवाब साहब की ओर से नजरें हटा लेने का क्या कारण था?

उत्तर : ट्रेन में लेखक के साथ के लिए नवाब साहब ने कोई उत्साह प्रकट नहीं किया। इस कारण लेखक ने यह महसूस किया कि यदि वे मुझे महत्त्व नहीं देते और मैं अपनी ओर से उनके साथ के लिए पहल करूँ, तो उनकी दृष्टि में मेरा सम्मान कम हो जाएगा। इसी कारण लेखक ने नवाब साहब की ओर से नजरें हटा लीं।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 6

तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान
धन्य तुम, माँ भी तुम्हारी धन्य!
चिर प्रवासी मैं इतर, मैं अन्य!
इस अतिथि से प्रिय तुम्हारा क्या रहा संपर्क
उँगलियाँ माँ की कराती रही हैं मधुपर्क
देखते तुम इधर कनखी मार
और होतीं जब कि आँखें चार
तब तुम्हारी दंतुरित मुस्कान
मुझे लगती बड़ी ही छविमान!

1. दंतुरित मुस्कान से क्या तात्पर्य है? 2

उत्तर : दंतुरित मुस्कान कविता में शिशु के नए–नए निकले दाँतों से झलकती मुस्कान को दंतुरित मुस्कान कहा गया है।

2. कवि ने स्वयं को 'प्रवासी', 'इतर' तथा 'अतिथि' क्यों कहा है? 2

उत्तर : कवि ने स्वयं को घर से दूर रहने के कारण 'प्रवासी' शिशु के लिए 'इतर' तथा शिशु ने कवि को पहली बार देखा इसलिए स्वयं को शिशु का 'अतिथि' कहा है।

3. कवि को शिशु की मुस्कान सबसे अच्छी कब लगती है? 2

उत्तर : जब बच्चा कवि की ओर तिरछी निगाहों से देखता है तब उसकी ओर देखती हुई कवि की आँखों से उसकी आँखें मिल जाती हैं। उस समय बच्चा अपने नन्हे–नन्हे नए दाँतों को झलकाते हुए मुस्कुरा उठता है। उस समय तिरछी निगाहों से ताकते हुए बच्चे की दंतुरित मुस्कान कवि को और भी अधिक सुंदर लगने लगती है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. 'संगतकार' कविता के माध्यम से कवि ने किस प्रकार की संवेदनशीलता विकसित करने का प्रयास किया है?

उत्तर : कवि दिखाता है कि संगतकार देखने में बहुत साधारण कलाकार होता है, परंतु मुख्य गायक को सफलता दिलाने में उसका महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। गायक जब भी अपनी सरगम से भटक जाता है अथवा अंतरे के जटिल सुरों में खो जाता है या तारसप्तक में जब मुख्य गायक स्वर के चढ़ाव के समय ऊँचाई तक पहुँचने में असमर्थ हो जाता है, तब संगतकार ही उस स्वर को गाकर उसे सँभाल लेता है। इतना सब कुछ होते हुए भी संगतकार अपने स्वर को मुख्य गायक के स्वर से धीमा ही रखता है ताकि गायक की श्रेष्ठता बनी रहे। इस प्रकार कवि ने बताया है कि प्रसिद्धि प्राप्त करने वाले लोगों की सफलता में अनेक दूसरे लोगों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, हमें उनकी महत्ता के प्रति भी संवेदनशीलता का परिचय देना चाहिए।

2. 'कन्यादान' शीर्षक कविता के आधार पर माँ के जीवन की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर : प्रस्तुत कविता में कवि ने माँ के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि माँ एक सजग एवं अनुभवशील नारी है। उसने अपनी पुत्री को नारी जागृति एवं सशक्तिकरण से संबंधित शिक्षा दी है। उसे बताया गया है कि वह केवल अपने शारीरिक सौंदर्य व वस्त्रों, आभूषणों की प्राप्ति आदि की ओर ही ध्यान न दे। उसे चाहिए कि वह सामाजिक परिवर्तन को खुली आँखों से देखे तथा अपने भीतर हिम्मत और साहस उत्पन्न करें। ताकि वह अपने प्रति होने वाले अपमान या अन्याय का विरोध कर सके। उसे अपने अधिकारों के प्रति सजग रहना होगा। यह सजगता ही उसके जीवन में एक नई दिशा दिखाएगी। इसी से उसका जीवन सुखी बन सकेगा।

3. 'एक के नहीं,– दो के नहीं', की बार–बार आवृत्ति कर कविता में किस प्रकार की विशेषता उत्पन्न की गई है?

उत्तर : कविता में जब किन्हीं शब्दों की बार–बार आवृत्ति की जाती है तो कवि का उद्देश्य उस बात पर विशेष बल देना होता है। यहाँ 'एक के नहीं, दो के नहीं' की बार–बार आवृत्ति कर कवि ने यह भाव प्रकट किया है कि फसल का उत्पादन किसी एक या दो के प्रयास से संभव नहीं है। इसके लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता पड़ती है। संसार में अरबों लोगों के भोजन के लिए अन्न उत्पादन करने में सैकड़ों नदियों के पानी, लाखों–करोड़ों लोगों के परिश्रम और हजारों खेतों की मिट्टी का योगदान होता है। अतः यहाँ इन शब्दों की बार–बार आवृत्ति कर कवि ने सामूहिकता की भावना पर विशेष बल दिया है। कवि ने यहाँ यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि प्रकृति और मनुष्य के सहयोग से ही सृजन संभव है।

4. 'हरि हैं राजनीति पढ़ि आए' पंक्ति में कृष्ण की किस प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है? स्पष्ट करें।

उत्तर : इस पंक्ति में गोपियों ने श्रीकृष्ण की उस प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है जिसके कारण वे प्रेम की मर्यादा को ठीक प्रकार से नहीं निभाते। कहने का भाव यह है कि गोपियाँ श्रीकृष्ण से सच्चे मन से प्रेम करती हैं और उनकी विरह की पीड़ा में व्याकुल हैं। ऐसे में उन्हें आकर गोपियों से मिलकर उनके विरह की व्याकुलता को शांत करना चाहिए था किंतु वे निर्गुण ईश्वर के उपासक उद्धव की परीक्षा लेने हेतु उसे योग का संदेश देकर गोपियों के पास भेज देते हैं। इसलिए गोपियाँ श्रीकृष्ण की इस नीति को देखते हुए उन्हें कहती हैं कि श्रीकृष्ण ने अब राजनीति पढ़ ली है। अतः अब वे राजनीतिज्ञ की भाँति व्यवहार करते हैं।

5. मृगतृष्णा किसे कहते हैं? 'छाया मत छूना' कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?

उत्तर : 'मृगतृष्णा' से अभिप्राय हिरण की चाह से है। हिरण को रेगिस्तान में रेत दूर चिलचिलाती धूप में पानी प्रतीत होता है अतः वह प्यास से व्याकुल उसे पाने के लिए दौड़ता है लेकिन पास पहुँचने पर वह पानी न पाकर रेत ही पाता है। इस कारण उसकी प्यास शांत नहीं होती। वहाँ से उसे फिर दूर की रेत पानी जैसी प्रतीत होती है। इस प्रकार हिरण हमेशा भ्रमित होता रहता है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए– $3 \times 2 = 6$

1. आधुनिक भौतिकवादी जीवन शैली ने बच्चों के स्वाभाविक विकास को अवरुद्ध किया है। बच्चों का स्वाभाविक विकास हो इसके लिए आप क्या सुझाव देंगे।

उत्तर : आधुनिक भौतिकवादी जीवन शैली के बच्चे स्वाभाविक रूप से विकसित नहीं होते क्योंकि वे अधिकतर समय अपने घर के अंदर टी.वी., मोबाइल, इंटरनेट या अन्य किसी भौतिक वस्तु के साथ चिपके रहते हैं तथा उसी पर दिखाए सुनाए गए विभिन्न आचरणों को अपना आदर्श मान कर उसी के अनुरूप व्यवहार करते हैं जो ठीक नहीं है। बच्चों के स्वाभाविक विकास के लिए टी.वी., मोबाइल, इंटरनेट तथा अन्य आधुनिक यंत्रों के प्रयोग पर नियंत्रण रखना होगा। उनकी मनोवृत्ति को रचनात्मक क्रिया–कलापों की ओर मोड़ना होगा। उन्हें समय प्रबंधन का गुण बताकर सभी कार्य समय पर करने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। घर के अतिरिक्त उन्हें घर के बाहर की गतिविधियों में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित करना होगा तभी उनका स्वाभाविक विकास सुनिश्चित होगा। भौतिक उपलब्धियाँ तृष्णाओं का विस्तार है। इसके जाल में फँसकर वर्तमान परिवेश के बच्चों का स्वाभाविक विकास नहीं हो पाता जो अत्यंत खतरनाक स्थिति है।

2. आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह का खिलवाड़ किया जा रहा है? इसे रोकने में आपकी क्या भूमिका होनी चाहिए?

उत्तर : प्रकृति के टूटते चक्र में वर्तमान पीढ़ी ऐसे काम कर रही है जिनसे प्रकृति दिन-प्रतिदिन रूठती जा रही है जिसके कारण प्राकृतिक आपदाएँ इतनी भयावह रूप धारण कर रही हैं जिन्हें रोक पाना मुश्किल है। पहाड़ों पर प्रकृति की शोभा को नष्ट किया जा रहा है, वृक्षों को काट कर पर्वतों को नंगा किया जा रहा है। शुद्ध, पवित्र नदियों को विविध प्रकार से प्रदूषित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी जा रही है। नगरों का, फैक्टरियों का गंदा पानी पवित्र नदियों में छोड़ा जा रहा है। सुख-सुविधा के नाम पर पॉलिथिन का अधिक प्रयोग और वाहनों के द्वारा प्रतिदिन छोड़ा धुआँ पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ रहा है। इस तरह प्रकृति का गुस्सा बढ़ रहा है, मौसम में परिवर्तन आ रहा है। ग्लेशियर पिघल रहे हैं। प्रकृति के साथ खिलवाड़ को रोकने में हम सहयोग दे सकते हैं-

1. वर्तमान में खड़े वृक्षों को न काटें और न ही काटने दें।
2. यथासंभव वृक्षारोपण करें और दूसरों को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करें।
3. वाहनों का प्रयोग यथासंभव कम करें। सब्जी लाने और व्यर्थ सड़कों पर घूमने में वाहनों का उपयोग न करें।
4. पॉलिथिन, अपशिष्ट पदार्थों तथा नालियों के गंदे पानी को नदियों में न जाने दें।

3. झूठी शान, प्रतिष्ठा और दिखावे के लिए फिजूलखर्ची कहाँ तक उचित है? अपने विचार बताएँ।

उत्तर : झूठी शान, प्रतिष्ठा और दिखावे के लिए फिजूलखर्ची अनुचित है। प्रतिष्ठा दिखाने की वस्तु नहीं होती अपितु उसे अपने कार्यों एवं व्यवहार द्वारा अर्जित किया जाता है। प्रतिष्ठा के लिए किसी आवरण की आवश्यकता नहीं है अपितु अच्छे कार्य व्यवहार, अनुशासन, स्वच्छता तथा धन की आवश्यकता है। फिजूलखर्ची से देश का कोष खाली होगा। फलतः हमारी सुविधाओं में कमी आएगी। किसी भी व्यवस्था का मितव्ययी होना राष्ट्र के विकास में सहायक होता है अतः हमें अपनी झूठी शान और दिखावे की भावना को तिलांजलि देकर सत्य को अपनाना होगा। तभी हम सच्चे अर्थों में विकास की ओर अग्रसर हो पाएँगे।

खण्ड-घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए- 10

(1) शिक्षा का अधिकार

संकेत-बिन्दु : ✲ भूमिका/शिक्षा की अवधारणा ✲ शिक्षा का अधिकार कानून ✲ वर्तमान शिक्षा की श्रेणियाँ ✲ माध्यमिक शिक्षा का महत्त्व ✲ उपसंहार

(2) जाति प्रथा

संकेत-बिन्दु : ✲ भूमिका ✲ जाति प्रथा का आरंभ ✲ जाति प्रथा से हानियाँ ✲ जाति प्रथा का वर्तमान परिदृश्य ✲ उपसंहार

(3) मेरे जीवन का लक्ष्य

संकेत-बिन्दु : ✲ भूमिका ✲ मेरे जीवन का लक्ष्य ✲ लक्ष्य चुनने का कारण ✲ उपसंहार

उत्तर :

(1) शिक्षा का अधिकार

संकेत-बिन्दु : ✲ भूमिका/शिक्षा की अवधारणा ✲ शिक्षा का अधिकार कानून ✲ वर्तमान शिक्षा की श्रेणियाँ ✲ माध्यमिक शिक्षा का महत्त्व ✲ उपसंहार

भूमिका/शिक्षा की अवधारणा- शिक्षा को मानव समाज में उच्च प्राथमिकता प्राप्त है, क्योंकि किसी भी देश की विकास प्रक्रिया का यह एक अभिन्न अंग है। शिक्षा से तात्पर्य है- शक्ति को ग्रहण कर मनुष्य द्वारा सही अर्थ में अपनी क्षमताओं का उपयोग करना सीखना एवं ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर बढ़ना।

शिक्षा का अधिकार कानून- वर्ष 2002 में संविधान के 86वें संशोधन द्वारा अनुच्छेद 21 A के भाग 3 द्वारा 6-14 वर्ष तक के सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का प्रावधान किया गया था। इसे प्रभावी बनाने के लिए 4 अगस्त, 2009 को लोकसभा में यह अधिनियम पारित कर दिया गया तथा 1 अप्रैल, 2010 से इसे लागू कर दिया गया। शिक्षा के अधिकार का प्रमुख उद्देश्य 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य, गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करना है। इस अधिनियम को सर्व शिक्षा अभियान (सब पढ़ें, सब बढ़ें) तथा वर्ष 2005 के विधेयक का ही संशोधित रूप कहा जाए, तो समीचीन ही होगा।

वर्तमान शिक्षा की श्रेणियाँ- वर्तमान समय में शिक्षा मुख्यतः तीन श्रेणियों में संपन्न होती है-प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च एवं विश्वविद्यालयी शिक्षा। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण श्रेणी माध्यमिक शिक्षा की होती है, क्योंकि इस सीमा को पार करने के उपरांत ही कोई विश्वविद्यालयी शिक्षा की ओर बढ़ सकता है। अतः माध्यमिक शिक्षा किसी भी राष्ट्र की रीढ़ होती है।

माध्यमिक शिक्षा का महत्त्व- माध्यमिक शिक्षा के महत्त्व को देखते हुए ही हमारे देश में माध्यमिक स्तर की शिक्षा निः शुल्क प्रदान करके इसे लाभकारी बनाने का प्रयत्न किया गया है। शिक्षा पद्धति में राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक सुधार के लिए अनेक योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। समाज में शोषित वर्गों, जैसे- महिलाओं, पिछड़े पर्वतीय क्षेत्रों आदि में रहने वाले लोगों के लिए हमारी सरकार ने उच्च शिक्षा के विशेष कार्यक्रम, जानकारी और कुशलता बढ़ाने के लिए सतत शिक्षा के कार्यक्रम आदि 'इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय' के अंतर्गत प्रारंभ किए हैं। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण क्षेत्रों के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को अच्छे स्तर की आधुनिक शिक्षा

उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 'नवोदय विद्यालय' के अंतर्गत उनका चयन प्रवेश–परीक्षा के आधार पर किया जाता है।

उपसंहार– भारत के सुंदर भविष्य के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा का समुचित स्वस्थ वातावरण तैयार किया जाए, जहाँ शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक रूप से स्वस्थ युवा अपनी क्षमताओं एवं योग्यताओं का विकास कर, अपनी सक्षमता का उपयोग देश के विकास में कर सकें।

(2) जाति प्रथा

संकेत–बिन्दु : ✲ भूमिका ✲ जाति प्रथा का आरंभ ✲ जाति प्रथा से हानियाँ ✲ जाति प्रथा का वर्तमान परिदृश्य ✲ उपसंहार

भूमिका– स्वतंत्रता के पश्चात् भारतवर्ष में एक नए युग का आरंभ हुआ। आज भारत निरंतर प्रगति कर रहा है, परंतु कुछ सामाजिक बुराइयाँ अभी भी इस देश की संस्कृति में पैठ (पकड़) बनाए हुए हैं। ऐसी ही एक सामाजिक कुरीति है– जाति प्रथा। जाति प्रथा के अंतर्गत मानव जाति को विभिन्न जातियों में बाँट दिया गया है। इससे कुछ मनुष्य स्वयं को ऊँची जाति का बताकर शेष समाज के व्यक्तियों के साथ अमानवीय व्यवहार करते हैं।

जाति प्रथा का आरंभ– प्राचीन काल में भारत में जाति व्यवस्था को आरंभ किया गया था। यह मनुष्य के कर्म पर आधारित एक अत्यंत उपयोगी सामाजिक व्यवस्था थी, लेकिन समय के साथ–साथ कर्म आधारित जाति व्यवस्था जन्म आधारित सामाजिक व्यवस्था की संकीर्ण रूढ़ियों में जकड़ गई। हिंदू धर्म में परंपरागत रूप से समाज को चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र में विभक्त किया गया है। समय के साथ–साथ इन्हीं चार वर्णों से लगभग 4000 से अधिक जातियों का उद्भव हुआ।

जाति प्रथा से हानियाँ– वर्तमान समय में जाति प्रथा एक सामाजिक बुराई के रूप में देखी जाती है, जिससे राष्ट्र को अनेक हानियाँ होती हैं। इसके कारण राष्ट्र की एकता को आघात पहुँचता है। लोग जाति–पाँति के नाम पर लड़ने–मरने को तैयार हो जाते हैं।

जाति प्रथा से लोगों में द्वेष तथा बैर–भाव बढ़ता है और एक ऐसी दासता का जन्म होता है, जिसके अंतर्गत कुछ व्यक्तियों को उच्च समझे जाने वाले व्यक्तियों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है।

जाति प्रथा का वर्तमान परिदृश्य– स्वतंत्रता के पश्चात् डॉ. अंबेडकर के प्रयासों से जाति प्रथा के उन्मूलन की दिशा में सराहनीय कदम उठाए गए। संविधान ने जाति प्रथा को लोक कल्याण में बाधा मानते हुए, जातिगत भेदभाव को अनुचित ठहराया। धीरे–धीरे जाति प्रथा का प्रभाव मंद होने लगा, परंतु आज भी देखा जा रहा है कि यह प्रथा पूर्णतः समाप्त नहीं हुई है। चुनावी दिनों में यह बात अनुभव की जा सकती है।

उपसंहार– वर्षों से चली आ रही परंपराएँ जब युगानुकूल नहीं रहतीं, तो कोई भी सभ्य समाज उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन करने में संकोच नहीं करता। यदि समाज परिवर्तन को नहीं अपनाता, तो वह पिछड़ जाता है। अब समय आ गया है कि जाति प्रथा को पूर्णतः समाप्त किया जाए, जिससे राष्ट्र की एकता, अखंडता तथा समृद्धि में बढ़ोतरी हो।

(3) मेरे जीवन का लक्ष्य

संकेत–बिन्दु : ✲ भूमिका ✲ मेरे जीवन का लक्ष्य ✲ लक्ष्य चुनने का कारण ✲ उपसंहार

भूमिका– यदि हमारे जीवन में जीने का कोई कारण नहीं होगा, कोई महत्त्वाकांक्षा नहीं होगी, कोई लक्ष्य नहीं होगा, तो हमारा जीवन भी व्यर्थ होगा। इसलिए सफलता के लिए हमारे जीवन का कोई–न–कोई लक्ष्य अवश्य होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी–अपनी रुचि, अपनी–अपनी आकांक्षाएँ होती हैं। उन्हीं के अनुसार मनुष्य अपना जीवन–लक्ष्य निर्धारित करता है।

मेरे जीवन का लक्ष्य– मेरे जीवन का भी एक निर्धारित लक्ष्य है। मैं एक आदर्श शिक्षक बनना चाहता हूँ। अध्यापक बनकर भावी भारत का भार उठाने तथा समर्थ नागरिकों का निर्माण ही मेरी महत्त्वाकांक्षा है। आज मैं ऐसे अनेक शिक्षकों को देखता हूँ, जो शिक्षा का सच्चा मूल्य नहीं समझते। वे मात्र धन कमाना ही अपने जीवन का उद्देश्य मान बैठे हैं। वे भूल गए हैं कि अध्यापक का कार्य बड़ा पवित्र और महान् है। एक अच्छा शिक्षक ही अच्छे राष्ट्र की नींव रख सकता है। अध्यापक स्वयं शिक्षा का केंद्र होता है। वह अपने शिष्यों को भी योग्य बनाकर उनके हृदय में ज्ञान की ज्योति से प्रज्वलित कर सकता है। मैं शिक्षक बनकर ज्ञान के प्रकाश से जन–जन के मन में व्याप्त अंधकार को दूर करना चाहता हूँ। मैं भावी पीढ़ी में यह भाव भी जाग्रत करना चाहता हूँ कि वे भगवान से यह प्रार्थना करें 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात् हे प्रभु! मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।

लक्ष्य चुनने का कारण– अध्यापक ही राष्ट्र की भावी पीढ़ी के जीवन को बनाते, सँवारते एंव सुधारते हैं। वे दुनिया से अज्ञान का अँधेरा दूर कर चारों ओर ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं। वे धन की कामना से दूर रहकर निःस्वार्थ भाव से राष्ट्र की सेवा करते हैं। छात्रों में छिपी शक्ति को विकसित करना और उन्हें देश–सेवा के लिए तैयार करना कोई सामान्य बात नहीं है। मैं अध्यापक बनकर उन्हें स्वावलंबन, सेवा, सादगी, स्वाभिमान, अनुशासन और स्वच्छता का पाठ पढ़ाऊँगा।

उपसंहार– विवेकानंद बनने के लिए रामकृष्ण परमहंस जैसे गुरु की आवश्यकता होती है। भाव यह है कि चरित्रवान शिक्षक ही छात्रों में चरित्र बल का विकास कर सकता है। यदि मेरी यह इच्छा पूर्ण हुई, तो मैं अपना जीवन सार्थक समझूँगा।

12. विकलांग विद्यार्थियों की सुविधा के लिए विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष को एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखिए। **5**

उत्तर :

सेवा में,
अध्यक्ष
विद्यालय प्रबंध समिति
गगन भारती कांवेंट स्कूल
मोहन गार्डन, उत्तम नगर,
दिल्ली।
दिनांक– 17 सितंबर, 2019
मान्यवर,

हमारे विद्यालय में कई विकलांग छात्र अध्ययनरत हैं। परंतु विद्यालय में सुविधाओं की कमी से उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यदि विद्यालय परिसर तथा कक्षा –कक्ष में इन्हें कुछ सुविधाएँ दी जाएं तो ये छात्र एक दिन विद्यालय का नाम रोशन कर सकते हैं। कक्षा–कक्ष में इनके लिए इनकी सुविधानुसार फर्नीचर तथा अन्य आवश्यक सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए। विद्यालय के मुख्य द्वार से कक्षा–कक्ष तक इनके आने–जाने की विशेष व्यवस्था होनी चाहिए तथा इनकी सुविधा के अनुसार विशिष्ट शौचालय का निर्माण होना चाहिए और जहाँ तक संभव हो इनके पठन–पाठन का कक्ष भूतल पर हो तो अति उत्तम है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप उपर्युक्त वर्णित सुविधाएँ हमारे विकलांग सहपाठियों को उपलब्ध कराने का पूर्ण प्रयास करेंगे।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
विकास

अथवा

अपने मित्र को एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखकर बताइए कि महानगरीय जीवन दुखद भी है तथा सुखद भी।

उत्तर :

A-128 राणा प्रताप बाग,
नई दिल्ली।
दिनांक– 20 मार्च, 2019
प्रिय मित्र राजेश,
सप्रेम नमस्कार।

तुम्हारा पत्र मिले काफी दिन हो गए। मन में चिंता हो रही थी तो मैंने तुम्हें पत्र लिखने का निश्चय किया। पहले तुमने दिल्ली में रहने की उत्सुकता दिखाई थी। आज मैं तुम्हें दिल्ली के जीवन से अवगत कराना चाहता हूँ।

तुम जानते हो कि दिल्ली भारत की राजधानी है। इसका पुराना इतिहास है। यह नगर अनेक बार उजड़ा और बसा। यहाँ पर भिन्न–भिन्न संस्कृतियों के लोग आए और गए। यहाँ माया भी है तथा तप भी है। यहाँ की चौड़ी सड़कें, गगनचुंबी इमारतें, ऐतिहासिक इमारतें आदि एक अद्‌भुत दृश्य प्रस्तुत करती हैं। यहाँ संसार की सब सुविधाएँ उपलब्ध हैं। अनेक शिक्षण संस्थाएँ, नौकरी के लिए हजारों क्षेत्र विद्यमान हैं। चिकित्सा सुविधाएँ विद्यमान हैं।

महानगरी का दूसरा रूप अत्यंत बुरा है। यहाँ घंटों यातायात जाम रहता है। दूसरे, यहाँ आवास की समस्या है। मकान मिलना तो लॉटरी खुलने के समान है। यहाँ पारस्परिक सद्‌भाव का अभाव है। सारा जीवन यंत्रवत् चलता रहता है। यहाँ निर्धन व्यक्ति के लिए कोई जगह नहीं। आशा है कि तुम महानगरीय जीवन से कुछ परिचित हो गए होंगे। शेष जानकारी साक्षात्कार होने पर मिल जाएगी। शेष सब कुशल है।
छोटों को प्यार व बड़ों को प्रणाम कहना।
तुम्हारा मित्र,
राहुल

13. आपको अपने घर का एक कमरा किसी विद्यार्थी को किराए पर देना है। इससे संबंधित एक आकर्षक विज्ञापन लगभग 25–50 शब्दों में तैयार कीजिए। 5

उत्तर :

विद्यार्थी के लिए एक कमरा उपलब्ध

- हवादार एक कमरा किराये पर देना है।
- पानी और प्रकाश की उचित व्यवस्था उपलब्ध है।
- किराया ₹1000

संपर्क करें– 9351230000

अथवा

विद्यालय में विद्यार्थियों द्वारा स्वयं बनाए गए वाशिंग पाउडर के लिए एक आकर्षक विज्ञापन लगभग 25–50 शब्दों में तैयार कीजिए।

उत्तर :

दिव्या वाशिंग पाउडर

- **बेहतर सफेदी**
- **जिद्दी दाग निकाले**
- **न हाथों में जलन**
- **कपड़ों का प्राकृतिक रंग बनाये रखे**
- **किफायती दाम**
- **सभी दुकानों पर उपलब्ध**

संपर्क करें– 9351230000

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online

WWW.CBSE.ONLINE